उसकी उपस्थिति की ओर बढ़ना

***रविवार का उपदेश*, 22 *नवंबर*, 2026**

परमेश्वर की और अधिक गहराई

हम बढ़ती हुई मात्रा में परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव कर सकते हैं। परमेश्वर उसे जानने की हमारी गहरी इच्छा को तृप्त कर सकता है। पुराने और नए नियम, दोनों में परमेश्वर की उपस्थिति की खोज करने को परमेश्वर के 'मुख की खोज' करना भी माना गया है। दूसरे शब्दों में, जब हम उसकी उपस्थिति की खोज करते हैं, तो हम उससे 'आमने-सामने' मिलते हैं। उसके मुख या उपस्थिति की खोज करने के द्वारा, हम परमेश्वर के स्वभाव, उसकी निकटता और वह जो कुछ भी है, उसकी खोज करते हैं, न कि केवल उन चीज़ों की जो वह हमारे लिए प्रदान कर सकता है।

हम उसे और अधिक जान सकते हैं और निरंतर अधिक गहराई से उसका अनुभव कर सकते हैं। यह इसलिए संभव है क्योंकि परमेश्वर अनंत है और उसे जानने, अनुभव करने और उससे प्राप्त करने के लिए हमेशा और भी बहुत कुछ है।

परमेश्वर मनुष्य के साथ संगति करना चाहता है

परमेश्वर सर्वव्यापी है अर्थात् वह हर जगह उपस्थित है (भजन संहिता 139:7,8), लेकिन वह स्वयं को इस प्रकार निकटता से प्रकट करना चाहता है कि उसकी निकटता का अनुभव किया जा सके और उसका स्वभाव प्रकट हो। पूरे पवित्रशास्त्र में हम मनुष्य के साथ संगति करने की उसकी इच्छा देखते हैं।

- अदन की वाटिका में **(**उत्पत्ति **3:8)** परमेश्वर और मनुष्य के बीच घनिष्ठ संगति।
- परमेश्वर ने अपनी महिमा को मिलापवाले तम्बू **(**निर्गमन **25:8-9)** में और बाद में **मंदिर (1 राजा 9:3) **में वास करने दिया, जहाँ महायाजक परमेश्वर की उपस्थिति में सेवकाई कर सकता था।
- परमेश्वर यीशु मसीह, हमारे इम्मानुएल **(**परमेश्वर हमारे साथ, मत्ती **1:23)** के द्वारा हमारे बीच वास करने आया।

- पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी के भीतर वास करने आया **(1** कुरिन्थियों **6:19)** और विभिन्न तरीकों से विश्वासी की सेवकाई करता है।

- प्रकाशितवाक्य प्रकट करता है कि जब परमेश्वर सब कुछ पुनः स्थापित करेगा, तब वह अपने लोगों के साथ वास करेगा। **"**परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है**,** और वह उनके साथ डेरा करेगा**"(**प्रकाशितवाक्य **21:3)**।

परमेश्वर का और अधिक अनुभव करना

परमेश्वर सर्वव्यापी है, फिर भी लोग संयोगवश उसका सामना नहीं करते। उसकी उपस्थिति के विभिन्न स्तरों या मात्राओं का अनुभव करने के लिए उसकी खोज करना आवश्यक है। जब हम उसे खोजते हैं, तो वह प्रतिज्ञा करता है कि हम उसे पाएँगे! वह प्यासे और लालसा रखने वाले हृदय को तृप्त करेगा। हमारे भीतर ऐसी भूख है जिसे केवल परमेश्वर ही तृप्त कर सकता है।

यिर्मयाह **29:13**

13 तुम मुझे ढूँढ़ोगे और पाओगे भी**;** क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।

यशायाह **44:3-4**

3 क्योंकि मैं प्यासी भूमि पर जल और सूखी भूमि पर नदियाँ बहाऊँगा**;** मैं तेरे वंश पर अपना आत्मा और तेरी सन्तान पर अपनी आशीष उण्डेलूँगा**; 4 वे उन मजनुओं के समान बढ़ेंगे जो धाराओं के पास घास के बीच में होते हैं।**

परमेश्वर की उपस्थिति को एक व्यक्ति या एक समूह अनुभव कर सकता है। उसकी उपस्थिति का अनुभव या विवेक हमारे आत्मिक इन्द्रियों के द्वारा होता है, यह आवश्यक नहीं कि हमारी शारीरिक इन्द्रियों के द्वारा ही हो। उसकी उपस्थिति की तीव्रता को अधिक मात्रा में अनुभव किया जा सकता है। जब मूसा ने परमेश्वर की महिमा या उसकी उपस्थिति की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति को देखने के लिए कहा, तब परमेश्वर ने उसे अपनी भलाई और अनुग्रह दिखाया (निर्गमन 33:19)। इसी प्रकार, कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रेम, करुणा, सुरक्षा या उसके स्वभाव के किसी भी गुण को अनुभव कर सकता है।

भजन संहिता **97:5**

5 पहाड़ यहोवा के सामने, मोम के समान पिघल गए, अर्थात् सारी पृथ्वी के परमेश्वर के सामने।

जब हम उसकी खोज करते हैं, तो हम उसकी उपस्थिति को बढ़ते हुए अनुभव कर सकते हैं। यह अनुभव हमारी आत्मिक इन्द्रियों से आगे बढ़कर हमारी भावनाओं या शरीर में भी महसूस किया जा सकता है। हम तापमान बढ़ने के साधारण उदाहरण के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति में होने वाली वृद्धि को समझ सकते हैं। जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है, वह अधिक मजबूत पदार्थों को भी पिघला सकता है, जो कम तापमान पर नहीं पिघलते। इसी प्रकार, हम उसकी उपस्थिति के प्रत्येक स्तर पर परमेश्वर की विभिन्न अभिव्यक्तियों और उनके हमारे तथा हमारी परिस्थितियों पर पड़ने वाले प्रभाव को देख सकते हैं।

लगनपूर्वक खोज

परमेश्वर की उपस्थिति की खोज पूरे मन और सच्चे हृदय से की जानी चाहिए।

भजन संहिता **42:1-2**

1 जैसे हरिणी नदी के जल के लिये हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये हाँफता हूँ। **2** **जीवते ईश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा?**

भजनकार परमेश्वर की उपस्थिति की अपनी खोज को एक अत्यावश्यक आवश्यकता और गहरी लालसा के रूप में वर्णित करता है, जैसे कोई हरिणी सूखे या पीछा किए जाने के कारण प्यासी हो गई हो। आवश्यकता का अर्थ है कि तृप्त होना अनिवार्य है, कोई वैकल्पिक बात नहीं। हरिणी के चित्रण के द्वारा भजनकार परमेश्वर की अपनी हताश और तीव्र खोज को दर्शाता है। कोई भी दूसरी चीज़ उसे तृप्त नहीं कर सकती थी। वह जीवते परमेश्वर की उपस्थिति में खड़े होने के लिए प्रतीक्षा नहीं कर सकता था, जहाँ वह जानता था कि उसकी परमेश्वर से भेंट होगी और वह उससे और अधिक प्राप्त करेगा।

भजन संहिता **63:1-2**

1 हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूँढ़ूँगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है।
2 इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूँ।

दाऊद घोषणा करता है कि परमेश्वर के साथ उसका सम्बन्ध घनिष्ठ है और वह परमेश्वर को अपना परमेश्वर कहता है! संभवत: उसने यह भजन अपने जंगल के दिनों में, कठिनाइयों से गुजरते समय लिखा था। परिस्थितियों के बावजूद, उसने परमेश्वर के साथ अपने मजबूत सम्बन्ध को बनाए रखा।

दाऊद परमेश्वर को जानने की अपनी इच्छा व्यक्त करता है। यह इच्छा इतनी प्रबल थी कि उसने उसे सुबह जल्दी जगा दिया। उसने दिन की पहली खोज के रूप में परमेश्वर को प्राथमिकता दी और किसी भी अन्य चीज़ से बढ़कर उसकी उपस्थिति से तृप्त होना चाहा। यह एक ऐसी उत्सुक खोज को दर्शाता है जिसमें उसका पूरा अस्तित्व लगा हुआ था। उसकी आत्मा और शरीर की लालसा स्पष्ट दिखाई देती है। दाऊद परमेश्वर की उपस्थिति को खोजने निकला और समझता था कि वही स्थान उसकी सामर्थ्य और महिमा का अनुभव करने का भी स्थान है!

उसकी उपस्थिति में प्रवेश करना

पुराने नियम में हम देखते हैं कि परमेश्वर ने मूसा को मिलापवाले तम्बू की स्थापना करने का निर्देश दिया। परमपवित्र स्थान (निर्गमन 26:30-34, निर्गमन 25:21,22) वह स्थान था जहाँ परमेश्वर की महिमा प्रकट होती थी। केवल महायाजक ही वर्ष में एक बार इस स्थान में प्रवेश कर सकता था।

पृथ्वी पर का मिलापवाला तम्बू स्वर्ग में स्थित सच्चे तम्बू या परमेश्वर की उपस्थिति की छाया था (इब्रानियों 8:1,2, 5)। नई वाचा के विश्वासियों के रूप में, यीशु मसीह के द्वारा हमें उसकी उपस्थिति में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त है (इब्रानियों 10:19-22)।

हम चुन सकते हैं कि मिलापवाले तम्बू के बाहरी आँगनों में ही रहें या फिर 'पर्दे के भीतर' परमपवित्र स्थान में प्रवेश करें।

इब्रानियों **6:19-20**

19 वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुँचता है,
20 जहाँ यीशु ने मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बनकर, हमारे लिये अगुआ के रूप में प्रवेश किया है।

उसकी उपस्थिति की प्रत्यक्ष अभिव्यक्तियाँ

परमेश्वर की उपस्थिति विभिन्न तरीकों से प्रकट हुई और उसने लोगों की सेवकाई की। आज हम भी आत्मिक रूप से और कभी-कभी प्राकृतिक रूप से ऐसी ही अभिव्यक्तियों का अनुभव कर सकते हैं।

कुछ अभिव्यक्तियाँ इस प्रकार हैं:

1. वर्षा (भजन संहिता 72:6)
2. आग (इब्रानियों 12:29)
3. प्रकाश (भजन संहिता 104:2)
4. बादल (निर्गमन 19:9)
5. हवा (प्रेरितों के काम 2:2)

जब परमेश्वर की उपस्थिति तीव्र हो जाती है, तब एक समय ऐसा आता है जब परमेश्वर की महिमा सब कुछ अपने अधीन कर लेती है! परमेश्वर की महिमा को अक्सर इस रूप में वर्णित किया जाता है कि परमेश्वर कौन है और वह क्या करता है। अपनी महिमा में प्रभु सर्वाधिकारी है, और हम शांत रहकर उससे प्राप्त कर सकते हैं।

उसकी उपस्थिति की आशीषें

परमेश्वर की उपस्थिति का सबसे बड़ा प्रतिफल स्वयं परमेश्वर है (फिलिप्पियों 3:7-11)। हम उसे और अधिक गहराई से जान सकते हैं और परमेश्वर के साथ घनिष्ठता का अनुभव कर सकते हैं।

हम निम्नलिखित बातों का भी अनुभव करते हैं:

1. उसकी उपस्थिति में व्यक्तिगत परिवर्तन होता है; हम बदल जाते हैं। (2 कुरिन्थियों 3:18)

2. प्रभु ने अपनी उपस्थिति में अपने प्रावधान, उद्धार, आनंद, सामर्थ्य और विजय को प्रकट करने की इच्छा की है (भजन संहिता 132:14-18)

3. उसकी उपस्थिति शांति और स्थिरता का स्थान है (भजन संहिता 46:10)

4. उसकी उपस्थिति में आनंद और अनन्त सुख है (भजन संहिता 16:11)

5. जब हम उसकी उपस्थिति में उसकी बाट जोहते हैं, तो हमारा बल नया होता जाता है (यशायाह 40:28-31)

6. उसकी उपस्थिति से ताज़गी के समय आते हैं (प्रेरितों के काम 3:19)

7. उसकी उपस्थिति में चमत्कार प्रकट होते हैं (व्यवस्थाविवरण 4:37)

8. बुराई पर विजय प्राप्त होती है (यशायाह 19:1)

9. हमें उसका अच्छी तरह प्रतिनिधित्व करने के लिए सामर्थ्य मिलती है (प्रेरितों के काम 4:13)

उसकी उपस्थिति को बनाए रखना

हम व्यक्तिगत रूप से या विश्वासियों के समुदाय के रूप में उसकी उपस्थिति को बनाए रख सकते हैं।

व्यक्तिगत रूप से हम निम्नलिखित बातों के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं:

1. उसकी उपस्थिति का अभ्यास करना (2 कुरिन्थियों 13:14)

2. गुप्त स्थान में वास करना (मत्ती 6:6)

3. गहरी आत्मिक भूख को विकसित करना (भजन संहिता 27:4)

4. आज्ञाकारिता का समर्पित जीवन जीना (यूहन्ना 14:21)

ऐसे अनेक समुदाय हैं जिन्होंने विशेषकर आत्मिक जागृति के समय परमेश्वर की उपस्थिति की सामर्थी अभिव्यक्तियों का अनुभव किया है। उनके बारे में पढ़ने से हमारे भीतर भी ऐसा ही करने की इच्छा जागृत होती है। सामूहिक रूप से, निम्नलिखित कदम हमें परमेश्वर की उपस्थिति का अनुभव करने में सहायता करेंगे।

1. ईश्वरीय संगति और प्रार्थना (मत्ती 18:20)

2. स्तुति और आराधना (2 इतिहास 5:13,14)

3. उसकी उपस्थिति में शरीर को महिमा करने का कोई अवसर न देना (1 कुरिन्थियों 1:29)

4. अभिषेक की खोज करना (जकर्याह 10:1, लूका 5:17)

सारांश

हम परमेश्वर का और अधिक अनुभव कर सकते हैं।

उसकी उपस्थिति का और अधिक अनुभव करने के लिए हमें पूरे मन से परमेश्वर की खोज करनी चाहिए।

उसकी खोज में हम परमपवित्र स्थान के भीतर और अधिक गहराई तक जा सकते हैं।

परमेश्वर स्वयं को विभिन्न तरीकों से प्रकट करता है और कभी-कभी उसकी उपस्थिति को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जा सकता है।

उसकी उपस्थिति में अनेक आशीषें हैं।

आइए, हम व्यक्तिगत रूप से और एक समुदाय के रूप में उसकी उपस्थिति की लालसा करें और उसे अपने बीच बनाए रखें।

सुसमाचार, उद्धार के लिए बुलाहट, अलौकिक सेवकाई का समय

पवित्र आत्मा की अगुवाई के अनुसार सेवकाई करें

उद्धार के लिए प्रार्थना

चमत्कारों के लिए प्रार्थना: मत्ती 6

अपनी गवाही यहाँ भेजें: **testimony@apcwo.org**

घोषणा करें: सभा के अंत में कृपया प्लास्टिक के

कप अपने साथ बाहर ले जाना और निकास द्वार पर रखे कूड़ेदानों में डालना याद रखें।

जीवन समूह अध्ययन मार्गदर्शिका

यह जीवन समूह की चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के उपदेश के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति वचन पर चलने वाला बन रहा है और अपना जीवन परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। जीवन समूह की बैठक सामान्यतः 1.5 से 2 घंटे तक चलेगी। प्रत्येक जीवन समूह में अधिकतम 12-15 लोग होंगे।

तैयारी

जीवन समूह का अगुवा: जीवन समूह की बैठक की तैयारी करने के लिए, आप उपदेश सुन सकते हैं या रविवार के उपदेश के नोट्स दोबारा देख सकते हैं। कृपया अपने जीवन समूह के सदस्यों से पूरे उपदेश के नोट्स पढ़ने के लिए न कहें। आपको केवल इतना करना है कि प्रत्येक व्यक्ति नीचे दिए गए वचनों को पढ़े और फिर नीचे दिए गए प्रश्नों का उपयोग करते हुए चर्चा, विचारों को साझा करने और सीखने के लिए समय दें। ये सभी सामग्री "All Peoples Church Bangalore" मोबाइल ऐप में या हमारी उपदेश पृष्ठ पर ऑनलाइन उपलब्ध हैं। जीवन समूह की बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

जीवन समूह की बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से की जा सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित वचनों को पढ़े:

मिलकर परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें

जीवन समूह एक चर्चा-आधारित और सहभागितापूर्ण बैठक है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सीखी हुई बातों को साझा करने का अवसर दिया जाता है। इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें और लोगों को अपने विचार साझा करने के लिए पर्याप्त समय दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि वह समूह चर्चा के दौरान अपनी व्यक्तिगत सीख के नोट्स बनाए।

Q1, परमेश्वर की उपस्थिति के किसी अनुभव को साझा करें और बताएं कि उससे आपका विश्वास किस प्रकार मजबूत हुआ।

Q2, भजन संहिता *42:1–2* और भजन संहिता *63:1–3* के आधार पर उसकी उपस्थिति की लगनपूर्वक खोज करने के विषय में चर्चा करें।

Q3, उन आशीषों पर चर्चा करें जो एक विश्वासी को परमेश्वर की उपस्थिति में प्राप्त होती हैं।

Q4, परमेश्वर की उपस्थिति का और अधिक अनुभव करने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से कौन-से कदम उठाएँगे?

प्रत्येक व्यक्ति कुछ समय (अधिकतम 3 मिनट) लेकर एक मुख्य सीख साझा कर सकता है और बता सकता है कि वह इसे अपने जीवन की विशेष परिस्थितियों में किस प्रकार लागू करने की सोचता है। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करके संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ समय (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने चालचलन से जुड़ी कोई बात, ऐसी कोई बात जिसे परमेश्वर उसे सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही या ऐसी कोई विशेष चुनौती साझा करे जिसके लिए वह प्रार्थना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे के लिए प्रार्थना और सेवकाई करके एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें

दो या तीन लोगों के छोटे समूह बनाएँ और बारी-बारी से आज सीखी गई बातों के प्रकाश में परमेश्वर का धन्यवाद करें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की सुनें। अपेक्षा करें कि पवित्र आत्मा के वरदान प्रवाहित हों, जो चंगाई लाएँ, चमत्कार प्रकट करें, भविष्यद्वाणी करें, आदि।

फिर से एक साथ इकट्ठा हों और निम्नलिखित बातों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1, परिवारों की सुरक्षा और मजबूती के लिए

2, परमेश्वर के पवित्र आत्मा के सामर्थी उण्डेले जाने के लिए, ताकि वह हम पर एक कलीसिया के रूप में और हमारे द्वारा हमारे शहर और राष्ट्र के अनेक लोगों को आशीष देने के लिए कार्य करे। परमेश्वर के आत्मा के सामर्थी कार्य के सिवाय और कोई बात हमारे शहर और राष्ट्र को बदल नहीं सकती।

3, BUILD TO IMPACT परियोजना के लिए—इस बात के लिए कि जब हम प्रभु और लोगों की सेवा करने के लिए अपने बाइबल कॉलेज और कलीसिया की सुविधाओं की योजना बनाते हैं और उनका निर्माण करते हैं, तो सभी कार्य अच्छी तरह से पूरे हों।

मिलकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हुए समापन करें।